कला–एक भाषा

श्रीमती कंचन मैनवाल*

जहाँ वाणी मूक हो जाती है, वहीं कला मौन की भाषा बनती है वाणी में शब्द, अर्थ और विचार होते हैं। कला में इंगित मुद्राओं एवं भंगिमाओं का निवास होता है। कला के द्वारा भावों का वर्णन किया जाता है।

अभिव्यक्ति की क्रिया में मनोरंजन एवं अलौकिकता लाने में कला महत्वपूर्ण योगदान करती है। अभिव्यक्ति और कल्पना की दृष्टि से जब हम कला के मूल सिद्धान्तों पर विचार करते हैं, तो हमें यह ज्ञात होने लगता है कि ''कला स्वयं एक भाषा है, जो अपनी विशिष्ट विधि से भावनाओं की अभिव्यक्ति करती है। भावों को वहन करने के लिए भाषा को माध्यम बनाया जाता है, उसी प्रकार एक कलाकार अपने अन्दर के भावों को अपनी कला के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचाता है, उसे अपनी बात समझाने के लिये शब्दों, ध्वनियों, स्वरों की आवश्यकता नहीं होती, वास्तव में भाषा तो एक शुद्ध प्रक्रिया मात्र है। भावों के बिना उसका अस्तित्व सम्भव ही नहीं इस प्रकार हम यह भी कह सकते हैं कि भाव ही भाषा है। कलाकार कल्पना–शक्ति द्वारा अपने हृदय में उद्भूत भावों को स्वरों अथवा आकृतियों में परिणित कर देता है, फिर इन्हीं भावों को दर्शक अनूदित अथवा रूपान्तरित कर ग्रहण करते हैं। यह सम्पूर्ण प्रक्रिया अभिव्यक्ति की संचारण शक्ति द्वारा होती है, जिसे कला की भाषा कहा जाता है। इस भाषा को प्रबल और शक्तिशाली बनाने में कलाकार का अपना अनुभव और उसकी प्रतिभा का विशेष योगदान होता है।

कला में अभिव्यक्त्यात्मक और कल्पनात्मक होने की दो विशेषताएं रहती हैं, कल्पनात्मक अनुभवों का हमारी भावनाओं के साथ निकट का सम्बन्ध है, एक रूप में तो ये हमारे हृदयान्तर्गत अनुभूत भावनाओं की ही अभिव्यक्ति है। किसी कल्पनात्मक कृति में किसी एक भावना विशेष का ही प्राधान्य रहता है। यह भावना विशेष उस कलाकृति के कलाकार की काल्पनिक प्रक्रिया का शुद्ध स्वरूप है, जिसका आधार उसके सौन्दर्यात्मक अनुभव होते हैं।

वार्तालाप के मध्य जिस प्रकार हम किसी भाषा द्वारा अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति करते हैं, इसी प्रकार कला के माध्यम से कलाकार अपने उन भावों की अभिव्यक्ति करता है। कलाकार की कल्पनात्मक क्रिया एक विशिष्ट भावना की अभिव्यक्ति करती है, जिसे आरम्भ की स्थिति में केवल कलाकार ही अनुभव करता है। इसी अनुभव की अनुभूति जब दर्शक को होती है, तब कला को सफलता प्राप्त होती है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि कलाकार और दर्शक कलाकृति के संदर्भ में दो विभिन्न व्यक्ति नहीं होते भावनात्मक दृष्टि से कला के माध्यम द्वारा उन्हें एकाकार हाना होता है। कलाकार की अन्तरात्मा में उद्भूत भावना का स्वरूप व्यक्तिगत होते हुए भी जब तक जन–सामान्य के हृदय की वस्तु नहीं बनता, तब तक उसकी कला को जीवन प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार कलाकार की आत्मिक भावना स्वयं चेतनात्मक क्रिया द्वारा कल्पनात्मक भावना में परिवर्तित हो जाती है।

* सहायक प्रोफेसर, विभागाध्यक्षा–चित्रकला, डी०ए०वी० (पी०जी०) कॉलेज, देहरादून।

भाषा की अभिव्यक्ति ही अभिव्यक्ति की एक मात्र विधि नहीं है और न ही यह आदिकाल से आरम्भ हुई है। आदिकाल से ही मनुष्य ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिये कला का सहारा लिया है। आज भी आदिकाल के मानव के जीवन के बारे में हमें उनके द्वारा बनाये गये चित्रों व कलाकृतियों से ही पता चलता है। कला देश–काल की सीमाओं से परे होकर भावनाओं को व्यक्त करने की क्षमता रखती है। इतिहास में विभिन्न कालों में कला ने राजनैतिक एवं धार्मिक परिस्थितियों को प्रभावित किया है। बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार में कला का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। कला ने भाषा की सीमाओं को तोड़ कर देश विदेश में बोद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार किया, बौद्ध धर्म के विचारों को चित्रकला के माध्यम से समझाया, यहाँ पर कला ने भाषा का काम किया है।

कला केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं है, यह एक संचार का माध्यम भी है। कलाकार अपनी प्रतिभा से इसे सफलतापूर्वक निभाता है। कला कलाकार एवं दर्शक के बीच संवाद का काम करती है, जिससे कलाकार के अन्दर उत्पन्न भाव कला के माध्यम से दर्शक के अन्दर पहुँच जाते हैं, बिना किसी भाषा को प्रयोग किये हुये दर्शक समझ जाते हैं कि कलाकार क्या कहना चाहता है, यहाँ पर यह कह सकते हैं कि कला भावों के आदान–प्रदान करने का एक सफल माध्यम है और हम भाषा के द्वारा भी भावनाओं का ही आदान–प्रदान करते हैं।

भारत में धार्मिक तथा अन्य विधि–विधानों में प्रयुक्त होने वाले प्रतीक सूक्ष्म रूप में विस्तृत अर्थ का संचालन करते हैं तथा किसी भी अन्य सूत्र की तुलना में अधिक स्पष्ट भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। प्रतीकों की एक ऐसी भाषा है, जिसके द्वारा आध्यात्मिक सत्य की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप में की जा सकती है और उन्हें सरलतापूर्वक समझा जा सकता है। दैवी शक्तियों के कुछ पक्षों की स्पष्ट रूप से समीक्षा की जा सकती है। भारतवर्ष में इस प्रकार के प्रतीकों का बाहूल्य है। शंख, चक्र और गदा कला और धर्म दोनों में ही प्रयुक्त होते हैं। समस्त भारतीय प्रतीकों के दोहरे अर्थ हैं, एक तो वह जो सामान्य व्यक्ति को उपयुक्त लगता है और दूसरा वह जो दार्शनिक आचार्यों को। प्रतीक जीवन और मृत्यु, सौन्दर्य और कुरूपता, कल्याण और विनाश के द्योतक हैं।

कलात्मक आकृतियों का विशिष्ट अर्थ, विभिन्न दृष्टिकोण में अनेक अर्थ और भाव से सम्बन्धित है। प्रत्येक शब्द कुछ अक्षरों से मिलकर बनता है, अक्षर आकृति ही तो है जो मान्यता प्राप्त किसी विशेष स्वर को सम्बोधित करते हैं। अक्षर की आकृति को देखकर जिस प्रकार स्वर का भाव दृष्टि के सम्मुख आ जाता है, उसी प्रकार एक शब्द को सामने देखकर किसी वस्तु विशेष का भाव आता है। किसी एक भाषा–लिपि में अंकित शब्द उस भाषा को न जानने वाले के लिए अर्थहीन होते हैं, ठीक यही बात कला की आकृतियों के विषय में भी कही जा सकती है। कला की आकृति विशेष का अर्थ स्वीकृत भावना विशेष के सम्दर्भ में ही निकाला जा सकता है, आकृतियाँ इस रूप में भावों के संचरण का माध्यम बनती हैं।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि कला एक भाषा है, संगीत, नृत्य, चित्रकला, काव्य एवं भाषण आदि भावाभिव्यक्ति के विभिन्न माध्यम हैं, जिन्हें भाषा के विभिन्न रूपों के नाम की संज्ञा प्रदान है।

सन्दर्भ

1. किरण प्रदीप – सृजन के मूलाधार
2. प्रो० रणवीर सक्सेना – कला, सौन्दर्य और जीवन
3. अशोक – कला, सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र
4. डा० ब्रजभूषण पालीवाल – कला के सिद्धान्त
5. गिराज किशोर अग्रवाल – कला निबन्ध
6. प्रो० रणवीर सक्सेना – कला सौन्दर्य और जीवन
7. डा० सरोज भार्गव – सौन्दर्य बोध एवं ललित कलायें
8. प्रो० चिरन्जी लाल झा – कला के दार्शनिक तत्व
9. प्रा० रणवीर सक्सेना – कला, सौन्दर्य और जीवन
10. डा० ब्रजभूषण पालीवाल – कला के सिद्धान्त
11. डा० ब्रजभूषण पालीवाल – कला के सिद्धान्त